18

अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता

छोटे बच्चों में विकास एवं अधिगम जीवन पर्यन्त निरन्तर होता है। छोटे बच्चों का विकास विभिन्न प्रकार के वातावरणों में होता है जैसे कि घर पर जहाँ बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ रहते हैं। समुदाय का औपचारिक मित्रतापूर्ण वातावरण तथा सीखने की पहली सीढ़ी यानी कि ईसीसीई केंद्र या प्री-स्कूल भी सीखने के लिए महत्वपूर्ण अधिगम मंच है। जो भी व्यवस्था हो, माता-पिता बच्चे के जीवन के इन प्रारंभिक वर्षों में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ईसीसीई एवं पूर्व प्राथमिक वर्षों के दौरान स्कूल तथा अभिभावकों के बीच एक सहज समन्वित और गुणवत्तापरक सहभागिता एवं सही संप्रेषण अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सार्वजनिक रूप से विभिन्न देशों की शिक्षा नीतियों तथा दिशा-निर्देशों में इस बात पर सहमति जतायी गई है कि माता-पिता ही बच्चे के प्रथम तथा प्रभावी शिक्षक हैं (OECD, 2012)। हमें याद रखना चाहिए कि छोटे बच्चे पूरी तरह से अपने माता-पिता तथा परिवार पर निर्भर होते हैं तथा परिवार ही बच्चे का प्रथम शिक्षक होता है। वास्तव में माँ को ही उनकी प्रथम शिक्षिका माना जाता है। इसलिए माता-पिता बच्चे की सोच भावनाओं, अभिवृत्ति एवं विचारों पर एक स्थायी प्रभाव डालते हैं। घर तथा प्री-स्कूल के बीच एक सकारात्मक जुड़ाव होना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण सहभागिता से वांछित सहयोग मिलता है जिससे छोटे बच्चों में अपेक्षित अधिगम प्राप्त किया जाता है जो बाद में बच्चों के प्री-स्कूल से प्राथमिक कक्षाओं में परागमन की प्रक्रिया को सरल बनाता है। संक्षेप में, सहयोगी अभिभावक तथा समझदार शिक्षक बच्चे की वृद्धि एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- ईसीसीई कार्यक्रमों में माता-पिता तथा समुदाय की सहभागिता की आवश्यकता महत्व का वर्णन करते हैं;

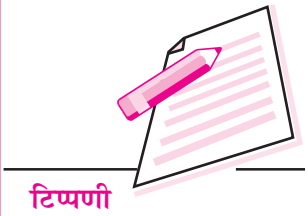

टिप्पणी

- ईसीसीई केंद्र के कार्यों में माता-पिता तथा समुदाय के योगदान की चर्चा करते हैं;
- ईसीसीई केंद्र के संचालन में माता-पिता तथा समुदाय की प्रभावी सहभागिता के तरीकों का वर्णन करते हैं एवं उन पर चर्चा करते हैं; और
- ऐसे क्रियाकलाप जिनमें माता-पिता तथा समुदाय की सक्रिय सहभागिता हो, का वर्णन करते हैं।

18.1 ईसीसीई के प्रति माता-पिता तथा समुदाय की जागरुकता की आवश्यकता एवं महत्व

न सिर्फ माता-पिता बल्कि परिवार तथा समुदाय के अन्य लोग भी बच्चों की देखभाल का उत्तरदायित्व निभाते हैं। प्री-स्कूल में भी बच्चे की भलाई हेतु उचित देखभाल आवश्यक है। *परिवार को शामिल करने तथा परिवार के साथ कार्य करने से हमारा क्या तात्पर्य है? आइए समझते हैं कि अभिभावकों तथा परिवार की सहभागिता से हमारा क्या अभिप्राय है।*

18.1.1 अभिभावक सहभागिता को परिभाषित करना

ईसीसीई में हम दो महत्वपूर्ण घटकों की बात करते हैं। पहला अभिभावक बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा एवं देखभाल में सहायक हैं। दूसरा बच्चों के प्रारंभिक अभिगम की प्रक्रिया में उनके अभिभावक सक्रिय सहभागी हैं। अभिभावक सहभागिता को हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि ''जन्म से ही बच्चे की वृद्धि एवं विकास में तथा उसकी प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में माता-पिता सहभाग करते हैं।'' अपने बच्चों के जीवन पर प्रभाव डालने वाले वे प्रथम स्रोत हैं। बच्चों के प्रारंभिक वर्ष प्रभाव की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण होते हैं। बच्चे के संरक्षक द्वारा जो कुछ भी कहा अथवा किया जाता है, बच्चे पर उसका गहरा प्रभाव पड़ता है। बाद के वर्षों में उनकी अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाना बेहद कठिन या कई बार असंभव होता है। इसलिए सही समय पर माता-पिता की सहभागिता अत्यंत आवश्यक है।

अभिभावक भागदारी को समझने के क्रम में हमें निम्नलिखित बिंदुओं को समझना आवश्यक है।

(i) माता-पिता को एक तनावमुक्त, सौहार्द्रपूर्ण पारिवारिक वातावरण बनाने में सहायता करना, जिससे बच्चे भयमुक्त तथा स्वतंत्र वातावरण में फल-फूल सकें।

(ii) अभिभावकों को प्री-स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहायता करने के लिए प्रोत्साहित करें तथा आवश्यकता पड़ने पर विषय आधारित शिक्षण अथवा प्रोजेक्ट आदि के लिए बाहर जाते समय साथ ले जाएँ, जहाँ बड़ों का निरीक्षण आवश्यक हो।

(iii) घर तथा प्री-स्कूल के बीच संप्रेषण बनाए रखने के रास्तों को खुला रखें तथा बच्चों के क्रियाकलाप एवं प्रगति को साझा करें। बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए दोनों तरफ़ से बातचीत आवश्यक है क्योंकि यह शिक्षक को बच्चे के बारे में बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, कोई बच्चा ध्वनियों को कैसे सीख रहा है; क्यों किसी

बच्चे को दूसरे बच्चों के साथ घुलने-मिलने में कठिनाई होती है; क्यों किसी बच्चे को फिसलने वाले झूले पर डर लगता है; क्यों कोई बच्चा पढ़ने के प्रति बेरुखी दिखाता है पर लिखने में आनंद अनुभव करता है। शिक्षक से बातचीत करने पर यह समझने में मदद मिलती है कि बच्चे को घर पर खेल-खेल में अर्थपूर्ण ढंग से सीखने में कैसे मदद की जाए।

(iv) अंत में, सामुदायिक सहभागिता का अर्थ समुदाय में संसाधनों को पहचानना तथा उनको प्री-स्कूल कार्यक्रमों, पारिवारिक परंपराओं तथा बच्चों के सीखने को बेहतर बनाने में प्रयोग करना है। उदाहरण के लिए, माता-पिता को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराना, ईसीसीई केंद्र में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कराने के लिए जगह की व्यवस्था के लिए गाँव के सरपंच से सहायता लेना, बच्चों को नियमित रूप से समय पर केंद्र में भेजने के लिए जागरुकता पैदा करना, परिवार के सदस्यों में स्वास्थ्य संबंधी जागरुकता के लिए किसी स्थानीय चिकित्सक की सहायता लेना, आदि।

एक गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई कार्यक्रम में अभिभावकों की सहभागिता समुदाय के सदस्यों को यह समझने में सहायता करती है कि बच्चे के लिए एक स्वस्थ एवं खुशहाल पारिवारिक वातावरण आवश्यक है। स्कूल तथा समुदाय के वातावरण को बेहतर बनाने के लिए भी अभिभावकों तथा शिक्षकों के बीच अच्छे संबंध होने आवश्यक हैं जो अन्ततः शिक्षकों एवं अभिभावकों को उनकी शैक्षिक प्रक्रिया को बेहतर बनाने में मदद करते हैं। एक गुणवत्तापरक ईसीसीई कार्यक्रम में परिवार, कार्यक्रम नियोजन और निरीक्षण में भागीदार होते हैं इसलिए वे न सिर्फ सूचनाएँ ग्रहण करते हैं बल्कि ईसीसीई कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में भी भागीदार होते हैं।

उपर्युक्त सभी सामग्री माता-पिता की शिक्षा, प्रशिक्षण तथा परिवार के लिए सहयोगी कार्यक्रमों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

18.1.2 हमें अभिभावकों तथा समुदाय की जागरूकता क्यों है?

व्यावहारिक तौर पर गुणवत्तापूर्ण सहभागिता का अर्थ है कि बच्चे के बारे में अभिभावकों के ज्ञान एवं जानकारी का शिक्षकों तथा स्कूल के अन्य सदस्यों द्वारा सम्मान किया जाए। अभिभावकों को पता होना चाहिए कि प्री-स्कूल शिक्षक, बच्चों तथा उनके विकास के बारे में जानते हैं। बच्चे लाभान्वित तभी हो सकते हैं जब दोनों पक्ष एक-दूसरे की बात सुनें व आपस में बात करें।

राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा नीति (2013) इस बात पर बल देती है कि बच्चों की सर्वोत्तम देखभाल उनके पारिवारिक वातावरण में हो सकती है इसलिए परिवार की देखभाल तथा सुरक्षा की क्षमताओं को मज़बूती प्रदान करने पर सर्वाधिक बल दिया जाएगा। बच्चों के लिए सही ईसीसीई कार्यक्रमों को सुनिश्चित करने में बाधक एक कारण अभिभावकों तथा अन्य संबंधित लोगों में विकास की दृष्टि से उचित ईसीसीई कार्यक्रमों की समझ का न होना है। इस कमी को पूरा करने के लिए संचार माध्यमों का अधिकाधिक प्रयोग, लोक नाटक, मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रयोग अभिभावकों, संरक्षकों, कार्यरत लोगों तथा बड़े समुदायों तक पहुँचाने के लिए तथा उचित प्रकार के ईसीसीई कार्यक्रमों के प्रति जागरुकता प्रदान करने के लिए किया जाएगा।

टिप्पणी

गरीब परिवारों के अभिभावक या निम्न आय वर्ग वाले परिवार 3-6 वर्ष के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (इसीई) को आवश्यक नहीं समझते, जिन्हें मुख्य रूप से ध्यान में रखकर यह कार्यक्रम बनाया गया है। ज्यादातर अभिभावक जो अपने बच्चों को ईसीसीई केंद्रों अथवा प्री-स्कूल में भेज रहे हैं, उनके ईसीसीई के उद्देश्यों तथा तात्पर्यों को लेकर अलग-अलग विचार हैं। उदाहरण के लिए, जिन अभिभावकों के बच्चे आँगनवाड़ी में जा रहे हैं, वे सोचते हैं कि आँगनवाड़ी एक ऐसा स्थान है जहाँ उनके बच्चों को पोषण मिलता है। कुछ अभिभावक यह सोचकर कि उन्हें कुछ खाली समय मिल जाएगा, अपने बच्चों को प्री-स्कूल में भेजते हैं। फिर भी अनेक ऐसे अभिभावक हैं जो अपने बच्चों को औपचारिक रूप से लिखने, पढ़ने एवं गणित सीखने के लिए केंद्र भेजते हैं। ऐसे अभिभावक शिक्षकों पर औपचारिक शिक्षण के लिए दवाब भी बनाते हैं जिसमें बच्चे को रटने के लिए बाध्य किया जाता है। ''उच्च गुणवत्ता वाले प्री-स्कूल का उद्देश्य बच्चों को लिखने, पढ़ने एवं संख्या ज्ञान देने वाला औपचारिक शिक्षण नहीं है बल्कि छोटे बच्चों को अनौपचारिक रूप से विकास के लिए उपयुक्त विधियों/क्रियाकलापों द्वारा सीखने में मदद करना है।''

बच्चे अपने-अपने परिवारों तथा समुदायों के स्नेह में विकास करते हैं, जो पारिवारिक संगठन, बोली, धार्मिक मतों तथा सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर विविधताएँ लिए होते हैं। बच्चे के विकास में परिवार एक प्राथमिक संदर्भ के रूप में कार्य करता है, इसलिए आँगनवाड़ी तथा पूर्व विद्यालय में प्रदान की जाने वाली प्रारंभिक शिक्षा तथा देखभाल बच्चे के विकास में एक जीवंत भूमिका अदा करती है। परिवार तथा समुदाय के संसाधनो का संवेगात्मक रूप से सहयोगी वातावरण बनाने में उपयोग करना आवश्यक है, जिसमें बच्चा अपना अधिकतम विकास कर सके। हमें यह समझना आवश्यक है कि जो समुदाय पालन-पोषण की विधियों के साथ-साथ सही समय पर प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा का समर्थन करते हैं, उन समुदायों के सभी लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार आता है। इससे समुदाय में सभी को सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति के अवसर मिलते हैं। इसलिए प्री-स्कूल तथा प्राथमिक शिक्षकों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे समुदाय को पूर्व-विद्यालय में अच्छी प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लाभों के बारे में जागरूक, निर्देशित एवं शिक्षित करते रहें।

पाठगत प्रश्न 18.1

बताइए कि निम्नलिखित कथन 'सत्य' है अथवा 'असत्य'–

(क) जब प्रत्येक सहभागी (अभिभावक, शिक्षक तथा समुदाय) आपस में बात करें तथा एक-दूसरे को सुनें तभी बच्चे लाभान्वित हो सकते हैं।

(ख) उच्च आय वाले परिवारों के माता-पिता 3-6 वर्ष के बच्चों के लिए ईसीसीई को आवश्यक नहीं समझते।

(ग) ज्यादातर अभिभावक जो अपने बच्चे को ईसीसीई केंद्र भेजते हैं, उनके प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के महत्व एवं उद्देश्यों को लेकर अलग-अलग विचार होते हैं।

टिप्पणी

(घ) प्री-स्कूल तथा प्राथमिक शिक्षकों के लिए समुदाय तथा अभिभावकों को शिक्षित तथा निर्देशित करना आवश्यक नहीं है।

(ङ) ईसीसीई की राष्ट्रीय नीति (2013) यह मानती है कि बच्चों की सर्वोचित देखभाल परिवार में ही हो सकती है।

18.2 ईसीसीई केंद्र के संचालन में अभिभावकों एवं समुदाय की भूमिका (सहभागिता)

ईसीसीई कार्यक्रम में अभिभावकों की भूमिका एवं महत्व को लेकर पहले भी काफ़ी चर्चा की जा चुकी है। अपने बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों को एक भागीदार की तरह कार्य करना चाहिए। जैसाकि हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं, अभिभावक अपने बच्चों के बारे में सब जानते हैं, कैसे वे घर पर व्यवहार करते हैं, घर पर सीखते हैं, परिवार के अन्य सदस्यों से किस प्रकार का व्यवहार करते हैं तथा अन्य महत्वपूर्ण लोगों से किस तरह व्यवहार करते हैं। प्रत्येक बच्चे से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिनके बारे में अभिभावक शिक्षक को जानकारी दे सकते हैं, जैसे– संस्कृति, स्वास्थ्य, व्यवहार या बालक से संबंधित कोई अन्य बात। प्री-स्कूल शिक्षक के लिए सूचना के स्रोत परिवार के सदस्य होते हैं। उदाहरण के लिए-बच्चे के पूर्व अनुभव क्या है तथा बच्चा वर्तमान में क्या कर रहा है। बच्चे के वर्तमान विकास से संबंधित अभिभावकों का अवलोकन क्या है? जब शिक्षक को अपने केंद्र के सभी बच्चों की आवश्यकताओं एवं पृष्ठभूमि के बारे में पता होगा, तो उसके लिए ईसीसीई कार्यक्रम को अधिक व्यवस्थित ढंग से चलाना आसान होगा।

एक प्री-स्कूल शिक्षक का यह उत्तरदायित्व है कि वह परिवार के सदस्यों को उनके बच्चे के विकास तथा सीखने में सहायक के रूप में शामिल करे। माता-पिता बहुत ही सहयोगी साबित होते हैं जब वे स्कूल स्टाफ से अपने बच्चे के बारे में खुलकर पूर्ण ईमानदारी के साथ बच्चों से संबंधित मुद्दों एवं सरोकारों पर बातचीत करते हैं। परिवार तथा समुदाय के साथ प्रभावी सहभागिता को परस्पर आपसी सम्मान एवं विश्वास तथा उनके (समुदाय) किसी समस्या के समाधान ढूँढ़ने और सहयोग करने के रूप में समझा जा सकता है।

18.3 ईसीसीई कार्यक्रम में अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता से लाभ

अभिभावकों तथा समुदाय की ईसीसीई केंद्र के कार्यो में सहभागिता सभी के लिए लाभप्रद है, जैसे - बच्चों के लिए, परिवारों के लिए, समुदाय तथा ईसीसीई कार्यक्रमों के लिए।

बच्चे लाभान्वित होते हैं जब:

- शिक्षक बिना इस बात को महत्व दिए कि बच्चे के परिवार का ढाँचा क्या है या उसके धार्मिक मत, घर पर बोली जाने वाली बोली, सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा परिवार के सदस्यों का शैक्षिक स्तर क्या है, बच्चे के परिवार को समझें तथा उसका सम्मान करें।

टिप्पणी

- परिवार एवं ईसीसीई केन्द्र / प्री-स्कूल के बीच जुड़ाव हो।
- अभिभावक बच्चों के बारे में पर्याप्त तथा सही जानकारी शिक्षक को दें तथा शिक्षक अभिभावकों को यह बताने में समर्थ हो कि उनके बच्चे क्या और किस प्रकार सीख रहे हैं, समय के साथ उन्होंने कितनी प्रगति की है तथा उनके बच्चों को आगे सीखने में सहयोग के लिए शिक्षक को और क्या-क्या करना है।
- परिवार के सदस्य एवं माता-पिता स्कूल या केंद्र तक पहुँचें तथा प्री-स्कूल क्रियाकलापों में हिस्सा लेने हेतु उन्हें प्रोत्साहित किया जाए।
- परिवार के वातावरण में यदि कोई खास परिवर्तन हो, जैसे- छोटे भाई-बहन का पैदा होना, नये घर में स्थानान्तरण, माता-पिता का अलग हो जाना, उत्पीड़न, परिवार में किसी का निधन, आदि तो इसके बारे में अभिभावक शिक्षक को अवश्य सूचित करें।

अभिभावक लाभान्वित होते हैं जब:

- उन्हें प्री-स्कूल/ईसीसीई केंद्र के कामों में रुचि लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए तथा उन्हें भी बच्चे के सीखने में भागीदार बनाया जाए।
- बच्चों के पालन पोषण की विधियों के बारे में अभिभावकों को पर्याप्त जानकारी हो। इस प्रकार की जानकारी अभिभावकों को उनके बच्चों के विकास को समझने में सहायक होती है जिससे वे अपने बच्चों की विशेष क्षमताओं तथा कमज़ोरियों के बारे में सकारात्मक ढंग से समझ पाते हैं।
- अभिभावकों को यह समझने में आसानी हो कि बच्चे का घर से प्री-स्कूल तथा प्री-स्कूल से प्राथमिक कक्षाओं में जाना बहुत महत्वपूर्ण पड़ाव है जिसमें एक निरंतरता तथा मजबूत जुड़ाव होना चाहिए।

प्री-स्कूल कार्यक्रम लाभान्वित होता है जब:

- सबकी भलाई के लिए प्री-स्कूल अभिभावकों तथा समुदायों को ईसीसीई केंद्र के कार्यों में सम्मिलित करें। ईसीसीई केंद्र / प्री-स्कूल अलग-थलग रह कर नहीं चलाए जा सकते हैं।
- शिक्षक, परिवार तथा समुदाय के साथ मिलकर जानकारी के आदान-प्रदान द्वारा विकासात्मक समस्याओं को सुलझाएं।
- परिवार एवं समुदाय के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने के लिए शिक्षक को अनेक औपचारिक तथा अनौपचारिक तरीके पता हो।
- समुदाय तथा परिवार दोनों सहयोगात्मक रवैये के साथ सहभागी बने। उदाहरण के लिए, अभिभावकों से प्राप्त सार्थक जानकारी के आधार पर शिक्षक ईसीसीई कार्यक्रम में फेरबदल कर सकता है।
- शिक्षक अभिभावकों की सहभागिता के लिए व्यावसायिक विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अवसरों को प्रयोग में लाएँ।

- शिक्षक अपने केंद्र के बच्चों की विभिन्न पृष्ठभूमियों के बारे में जानें ताकि इन विभिन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि वाले परिवारों से उसी के अनुसार संप्रेषण कर सकें।
- शिक्षक बच्चों को स्कूल लाने तथा स्कूल से ले जाने के अलावा भी स्कूल की व्यवस्था में अभिभावकों को शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करें।
- शिक्षिक माता-पिता के कार्य के समय के अनुसार उनकी सहभागिता के लिए उचित समय का चयन करें।
- शिक्षिक माता-पिता को उनके बच्चों की प्रगति के बारे में सभा, फोन तथा पोर्टफोलियो के माध्यम से अवगत कराएं।
- शिक्षक अभिभावकों को प्री-स्कूल में आने, क्रियाकलापों के अवलोकन तथा प्रतिपुष्टि की अनुमति दें।

पाठगत प्रश्न 18.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) बच्चों की शिक्षा में उनके अभिभावकों को शामिल करने के लिए उन्हें ..... के रूप में देखा जाना चाहिए।

(ख) परिवार तथा ..... की प्रभावी सहभागिता को परस्पर आपसी सम्मान एवं विश्वास के रूप में समझा जा सकता है।

(ग) बालक का विकास सर्वोचित ढंग से होगा जब घर तथा ..... के बीच अनुभवों एवं अपेक्षाओं के संबंध में एक निरंतर जुड़ाव होगा।

(घ) एक गुणवत्तापूर्ण प्री-स्कूल व्यवस्था में अभिभावकों द्वारा व्यवस्था देखने क्रियाकलापों के निरीक्षण तथा ..... प्रदान करने के अवसर होने चाहिए।

(ङ) एक शिक्षक की भूमिका अभिभावकों को बच्चे के सर्वाधिक लाभ के लिए .... के साथ कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

(च) ..... बच्चे का सबसे अच्छा पालन-पोषण करने में समर्थ होते हैं, जब उन्हें प्री-स्कूल/ईसीसीई केंद्र के कार्यो के बारे में पर्याप्त जानकारी होती है।

18.4 ईसीसीई केंद्र/प्री-स्कूल के संचालन में माता-पिता तथा समुदाय के प्रभावी सहभागिता के तरीके

जैसा कि पहले भी चर्चा की जा चुकी है कि बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा माता-पिता, स्कूल तथा समुदाय की एक मिली-जुली उत्तरदायित्व है। इसलिए परिवार तथा समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु प्री-स्कूल / ईसीसीई केंद्रों में परस्पर जुड़ाव होना चाहिए। इस साझेदारी की गुणवत्ता निश्चित तौर पर ईसीसीई कार्यक्रमों की गुणवत्ता को निर्धारित करती है। ऐसे अनेक तरीके हैं जिससे शिक्षक, शिक्षक-अभिभावक संबंधों को सुदृढ़ कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अभिभावकों को जानने के लिए शिक्षक बच्चों के अभिभावको से उनकी किसी विशेष

टिप्पणी

रुचि के बारे में पूछ सकती है जिससे वे बच्चे की शिक्षा तथा देखभाल में जुड़ सकते हैं। कुछ माता-पिता कक्षा के क्रियाकलापों में भाग लेकर प्रसन्न होंगे। अन्य कुछ कमेटी का गठन कर या बोर्ड के एक सदस्य बनकर, न्यूज़लेटर में लिख कर, इंटरनेट पर वेब पेज बनाकर या आर्थिक संसाधनों की वृद्धि के लिए प्रयास करके, अच्छा योगदान दे सकते हैं।

सर्वप्रथम शिक्षक को चाहिए कि वह अभिभावकों से बात करे और इसके लिए उसे माता-पिता से उनके बच्चों के बारे में बात करने के तरीके ढूँढ़ने हैं।

18.4.1 संप्रेषण

ईसीसीई व्यवस्था या प्री-स्कूल में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि अभिभावकों तथा स्कूल के स्टॉफ़ के बीच बच्चे के बारे में औपचारिक तथा अनौपचारिक संप्रेषण के अवसर आते रहें। औपचारिक मुलाकातों (जैसे–शिक्षक-अभिभावक सभा) के साथ अनौपचारिक रूप से अभिभावकों से बातचीत को भी महत्व देना चाहिए, उन्हें केंद्र की व्यवस्था में आमंत्रित एवं सम्मिलित कर इसकी शुरुआत की जा सकती है। शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह संप्रेषण बच्चे के सीखने तथा विकास को प्रोत्साहित करता है। इसे निम्नलिखित तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है–

- बच्चों के सीखने तथा विकास से संबंधित जानकारी उनके अभिभावकों तक पहुँचाना।
- अभिभावकों के ज्ञान और सहयोग को बच्चे के सीखने एवं विकास की योजना बनाने तथा आकलन करने के लिए एकीकृत करना।
- बच्चों के सीखने एवं विकास को समझने में माता-पिता को सहयोग करना।

अब समस्या यह आती है कि अभिभावकों से संप्रेषण किस प्रकार किया जाए। अधिकांश माता-पिता कामकाजी हैं और शिक्षकों से बातचीत करने के लिए उनके पास समय नहीं है। यहाँ तक कि कुछ तो शिक्षक-अभिभावक सभा (PTM) में भी नहीं आ पाते। इसलिए शिक्षक को ऐसे अभिभावकों को भागीदार बनाने तथा संप्रेषण करने के तरीकों को खोजने की आवश्यकता होती है।

18.4.1.1 अभिभावकों तथा समुदाय के साथ संप्रेषण के तरीके

एक गुणवत्तापूर्ण सहभागिता की नींव रखने के लिए आवश्यक है कि प्री-स्कूल, माता-पिता, समुदाय तथा बच्चों के बीच एक ''प्रभावी तथा अर्थपूर्ण संप्रेषण'' रहे।

- **संचार के विभिन्न उपकरणों तथा माध्यमों के प्रयोग** द्वारा, इसमें न्यूजलेटर, वेबसाइट, ई-मेल, सभाएँ, शिक्षकों तथा अभिभावकों के साक्षात्कार तथा पीटीएम शामिल हैं।
- **प्री-स्कूल में क्रियाकलाप कैलेण्डर** बनाएँ, जिसमें उत्सव या आयोजन तथा पूर्व विद्यालय में छुट्टियाँ आदि जहाँ अभिभावकों की सहभागिता बेहद महत्वपूर्ण है, को रेखांकित करें। कुछ विशेष क्रियाकलाप भी कराए जा सकते हैं, उदाहरण के लिए, अभिभावक अपनी इच्छा से केंद्र में आकर कहानी/कविता सुना सकते हैं।

- बच्चों के विकास एवं प्रगति के बारे में बताने के लिए शिक्षक-अभिभावक बैठक **(PTM)** कराएँ।
- **यदि आवश्यक हो तो बच्चे के घर जाएँ,** इससे शिक्षक को बच्चे तथा उसके परिवार से जुड़ने का मौका मिलेगा। शिक्षक बच्चे के परिवार के सांस्कृतिक वातावरण तथा विशेष योग्यताओं के बारे में जान सकेगा।
- शिक्षक अभिभावकों से बच्चों को स्कूल **लाने एवं ले जाने के समय** भी बात कर सकते हैं, इससे अभिभावक अनौपचारिक ढंग से शिक्षक से बात कर सकेंगे।
- अभिभावकों के लिए विशेष तौर पर **नोटिस अथवा बुलेटिन बोर्ड** बनाएँ तथा उन पर मीटिंग, पौष्टिक व्यंजन सूची तथा अन्य संबंधित जानकारी साझा करें।
- **स्थानीय भ्रमण** की योजना में अभिभावकों को भी शामिल करें।

इसके अलावा भी अनेक तरीके तथा योजनाएँ हैं, जिनके द्वारा माता-पिता ईसीसीई से जुड़ सकते हैं जैसे:

- आर्थिक सुधार के लिए सहयोग।
- गमलों आदि की सफ़ाई एवं पौधे लगाना।
- शिक्षण-अधिगम सामग्री तैयार करना।
- बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाना।
- कक्षा में सहयोग करना तथा छोटे समूहों के साथ कार्य करना जैसे क्ले मॉडलिंग।
- त्योहारों के आयोजन में सहयोग करना।
- वार्षिक आयोजन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहयोग करना।

18.5 समुदाय का स्वत्व एवं सहभागिता

केंद्र के सुचारू संचालन में समुदाय का स्वत्व एवं सहभागिता बेहद महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को चाहिए कि वे समुदाय के सदस्यों को ईसीसीई के महत्व के बारे में समझाएँ एवं आश्वस्त करें। प्राथमिक स्कूल की मदद से प्री-स्कूल या ईसीसीई तथा बाल्य देखभाल से संबधित संदेशों के प्रसार के लिए शिक्षक गाँव में कैम्प की योजना बना सकता है तथा उनकी व्यवस्था कर सकता है। सरपंच तथा अन्य पंचायत के सदस्यों को छोटे बच्चों के लिए ईसीसीई के लाभों के बारे में बताना चाहिए। यह नुक्कड़ नाटक, रोल प्ले, सामूहिक चर्चा, प्रदर्शनी तथा समर्थन के पोस्टर आदि के द्वारा भी बताया जा सकता है। यह कार्य समुदाय के कुछ सक्रिय लोगों की सहायता से किया जाना चाहिए। इस बारे में कुछ बिन्दु इस प्रकार हैं:-

- शिक्षकों को चाहिए कि वे समुदाय का विश्वास प्राप्त करें तथा पुराने विद्यार्थियों का एक समूह बनाएँ। फिर उनसे प्रचार सामग्री जुटाने में सहायता माँगे, जैसे प्री-स्कूल/ ईसीसीई केन्द्र के बैनर, साइन बोर्ड या लोगो (Logo) आदि।
- स्वास्थ्य सबके लिए पहली प्राथमिकता है, इसके लिए शिक्षक को संबंधित स्थानीय

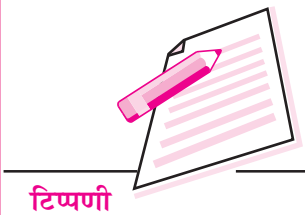

टिप्पणी

स्वास्थ्य कर्मचारियों से संपर्क करने तथा परामर्श लेते रहना आवश्यक है।

- जब हम परस्पर ज़िम्मेदारी की बात करते हैं, तो प्री-स्कूल ईसीसीई केन्द्र को भी प्री-स्कूल ईसीसीई केन्द्र की सुविधाओं को सामुदायिक कार्यों के लिए उपलब्ध करा देना चाहिए, जैसे पुस्तकालय, प्रौढ़ शिक्षा, सामुदायिक सभाएँ इत्यादि।
- ग्राम सरपंच तथा समुदाय के सदस्यों को ईसीसीई केंद्र के लिए सुविधाएँ जुटाने में शामिल करें, जैसे- बच्चों के पीने के लिए साफ़ पानी, कक्षा के सामान की मरम्मत, शिक्षक अभिभावक सभा का आयोजन तथा बच्चों को रोज़ एवं नियम से ईसीसीई केंद्र में भेजना आदि।
- प्री-स्कूल एक ''मासिक ईसीसीई दिवस'' निर्धारित कर सकता है और केंद्र पर हर महीने महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (MWCD) के द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के आधार पर इसका आयोजन किया जा सकता है। इस दिन के आयोजन से शिक्षकों एवं समुदाय के बीच संप्रेषण के रास्ते खुलेंगे। शिक्षक तथा ईसीसीई केन्द्र से जुड़े अन्य लोग केन्द्र के समर्थन के लिए, जागरूकता फैलाने तथा माता-पिता एवं समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए कार्यक्रमों का आयोजन कर सकते हैं।

18.5.1 प्रारंभिक बाल्यावस्था संस्थानों तथा माता-पिता के बीच सुदृढ़ सहभागिता की प्रमुख विशेषताएँ

कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- प्रारंभिक शिक्षा में माता-पिता की भूमिका की शिक्षक एवं केन्द्र के अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा पहचान;
- प्रारंभिक शिक्षा में माता-पिता द्वारा आदर्श भूमिका निभाना तथा बच्चे के सफलतापूर्वक सीखने में उनकी निरंतर सहभागिता के महत्व की पहचान;
- अभिभावकों का केंद्र में स्वागत करना तथा माता-पिता, शिक्षकों एवं बच्चों के बीच में परस्पर मेलजोल के अवसर;
- प्री-स्कूल द्वारा विभिन्न माध्यमों से अभिभावकों को ईसीसीई कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान करना;
- परिवार में माता-पिता तथा अन्य बड़े लोगों के विशेष गुणों/कौशलों को पहचानना तथा उन गुणों का शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए प्रयोग करना;
- माता-पिता को उनके बच्चों की वृद्धि एवं प्रगति का पूर्ण ज्ञान कराना तथा उनका सहयोग प्राप्त करना;
- नए माहौल में बच्चे तथा माता-पिता को सुरक्षित महसूस कराना; तथा
- अभिभावक गोष्ठियों, कार्यशालाओं, अभिभावक संसाधन केंद्रों द्वारा सीखने के अवसर प्रदान कराना।

गतिविधि 18.1

ईसीसीई केंद्र में जा रहे कुछ बच्चों के माता-पिता से साक्षात्कार कीजिए। उनसे प्रारंभिक शिक्षा के बारे में उनके अनुभव, उनके सरोकार तथा केन्द्र की ऐसी परंपराएँ, जो उन्हें सहयोग लगी हैं, के बारे में पूछें।

18.6 माता-पिता एवं समुदाय की सक्रिय सहभागिता के लिए कुछ गतिविधि

नीचे एक प्री-स्कूल के निर्धारित 'मासिक ईसीसीई दिवस' में माता-पिता तथा समुदाय को शामिल करने के लिए कुछ गतिविधियों की सूची दी जा रही है। शिक्षिक प्रत्येक ईसीसीई दिवस के लिए गतिविधियों का चयन कर सकता है तथा उन गतिविधियों का योजना अनुसार क्रियान्वन सुनिश्चित कर सकता है। निश्चित मासिक ईसीसीई दिवस के क्रियाकलाप में सभी माता-पिता एवं समुदाय को सहभाग करना चाहिए।

18.6.1 निर्धारित मासिक ईसीसीई दिवस हेतु क्रियाकलाप

(i) ईसीसीई कार्यक्रमों में बच्चों द्वारा बनाये गये दैनिक कार्य की प्रदर्शनी लगाना (आर्ट तथा क्राफ्ट कार्यपत्रक आदि)

(ii) बच्चों का सामूहिक प्रदर्शन जैसे - नृत्य, नाटक, कविता पाठ आदि (प्री-स्कूल के सभी बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करें)

(iii) खेल दिवस का आयोजन (प्री-स्कूल के सभी बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करें)

(iv) बच्चों द्वारा किये गये गतिविधियों का माता-पिता तथा समुदाय के सामने प्रदर्शन करना और तार्किक रूप से माता-पिता को यह समझाना कि ये गतिविधि किस प्रकार लाभप्रद हैं।

(v) छोटे बच्चों तथा माता-पिता/समुदाय का आनन्ददायी गतिविधियों में सहभाग, जैसे-बाल मेला/दिवाली/स्थानीय त्योहार/मेले, प्रदर्शनी आदि।

(vi) अभिभावक-शिक्षक अन्तर्क्रिया जिसमें आकलन तथा बच्चे के बारे में संपूर्ण प्रतिपुष्टि साझा की जाए।

(vii) माता-पिता तथा समुदाय के सहयोग से खेल तथा शिक्षण सामग्री का विकास।

(viii) ईसीसीई के समर्थन में प्रचार सामग्री लगाना (चार्ट/दृश्य-श्रव्य सामग्री)।

(ix) स्थानीय कलाकारों/शिल्पकारों के सहयोग से खेल सामग्री तैयार करना।

(x) ''माता-पिता से विचार विमर्श हेतु विषय सूची'' में से माता-पिता के लिए वार्तालाप तैयार करना।

(xi) बच्चों/शिक्षकों/देखरेखकर्ता/सहायकों को पुरस्कृत करने के लिए समुदाय को शामिल करना।

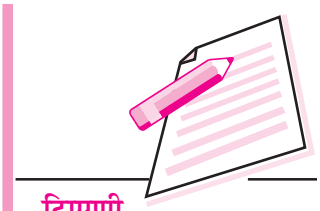

टिप्पणी

(xii) खिलौना बैंक/क्रियाकलाप बैंक/पुस्तक बैंक: पूर्व विद्यालय में ऐसा क्षेत्र बनाना जहाँ माता-पिता खिलौने, खेल सामग्री, किताबें, कठपुतलियाँ तथा शिक्षण सामग्री दान कर सकते हैं।

(xiii) स्थानीय सांस्कृतिक कहानियाँ/कविताएँ/गीत/खेल, कलाकृतियाँ तथा कलात्मक कार्यों को क्रियाकलाप बैंक के लिए एकत्र करना।

(xiv) प्री-स्कूल में एक 'क्रियाकलाप कोना या रुचि क्षेत्र बनाना', उदाहरण के लिए ब्लॉक निर्माण क्षेत्र, जोड़-तोड़ करने का खेल क्षेत्र, आर्ट एण्ड क्राफ्ट क्षेत्र, भाषा क्षेत्र, गुड़िया क्षेत्र तथा विज्ञान क्षेत्र आदि।

*[**स्रोत**–निर्धारित ईसीसीई दिवस हेतु निर्देश, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय]*

18.6.2 निर्धारित ईसीसीई दिवस पर अथवा अभिभावक शैक्षिक गोष्ठी के दौरान चर्चा किए जाने वाले विषय

माता-पिता तथा समुदाय के साथ चर्चा करने योग्य कुछ विषयों की सूची नीचे दी गई है:

- प्रारंभिक उद्दीपक;
- प्रारंभिक बाल्यावस्था का महत्व;
- बाल विकास एवं वृद्धि;
- सीखना तथा खेलना;
- छोटे बच्चों के लिए अच्छा पोषण;
- बाल्यावस्था रोग - रोकथाम एवं उपचार;
- बच्चों को प्री-स्कूल/प्राथमिक स्कूल हेतु तैयार करना;
- चुनौतीपूर्ण व्यवहार का प्रबंधन;
- प्रारंभिक साक्षरता अनुभवों को प्रदान करना तथा उन्हें प्रोत्साहित करना;
- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शीघ्र पहचान करना;
- बाल उत्पीड़न; तथा
- बच्चे अथवा समुदाय की आवश्यकतानुसार अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की जा सकती है।

18.6.3 एक सफल शिक्षक-अभिभावक सभा/अभिभावक गोष्ठी के आयोजन के चरण

- स्थान का चयन एवं व्यवस्था करना।
- गोष्ठी के स्थान तथा समय के बारे में अभिभावकों एवं समुदाय को पहले से सूचित करना।

- गोष्ठी में कराए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची तैयार करना।
- माता-पिता के साथ उन्हीं के स्तर के अनुसार मित्रतापूर्ण माहौल में गोष्ठी करना।
- प्री-स्कूल सहायकों की मदद से बच्चों को संभालने की व्यवस्था करना।
- बैठने की व्यवस्था इस प्रकार करना कि सभी लोग भागीदार तथा सक्रिय महसूस करें।
- सभी अभिभावकों को आपस में बातचीत का समय दें।
- सक्रिय तथा अर्थपूर्ण वार्तालाप को प्रोत्साहित करें।
- माता-पिता को शैक्षिक संदेश एवं समर्थन देने के लिए तथा प्रोत्साहित करने के लिए क्रियाकलाप एवं खेल आदि की व्यवस्था करें।

पाठगत प्रश्न 18.3

1. ईसीसीई केंद्र के क्रियान्वन में माता-पिता तथा समुदाय के सहभाग के लिए कराए जाने वाले कोई आठ क्रियाकलाप लिखिए।

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा:

- बच्चों के सीखने में माता-पिता तथा समुदाय की भूमिका को पहचानना चाहिए तथा महत्व देना चाहिए। यह सहभागिता प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को महत्व देने का स्पष्ट संकेत है।
- शिक्षण प्रक्रिया से सर्वाधिक परिणाम प्राप्त करने के लिए शिक्षक को न सिर्फ बच्चों से विश्वसनीय संबंध बनाने चाहिए बल्कि माता-पिता तथा समुदाय के साथ भी प्रभावी संबंध रखने चाहिए।
- गुणवत्तापूर्ण बाल्यावस्था शिक्षा में माता-पिता एवं समुदाय की सक्रिय सहभागिता बच्चों के लिए सकारात्मक परिणाम देती है।
- अभिभावकों को उनके बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा में भागीदार बनाने की बहुत-सी रणनीतियाँ एवं तरीके हैं।
- ईसीसीई दिवस बच्चों की प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं देखभाल में माता-पिता और समुदाय की सहभागिता को प्रोत्साहित करेगा तथा छोटे बच्चों के पर्याप्त विकास के लिए सहभागिता स्थापित कर सकेगा।

पाठान्त प्रश्न

1. ईसीसीई में माता-पिता तथा समुदाय की जागरूकता की क्या आवश्यकता एवं महत्व है?

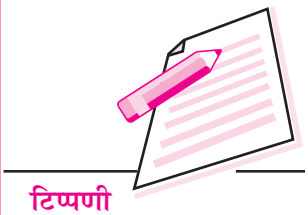

टिप्पणी

2. ईसीसीई में माता-पिता की सहभागिता के कोई पाँच लाभ बताइए।

3. जब माता-पिता तथा समुदाय के सदस्य प्री-स्कूल क्रियाकलापों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं तो यह प्री-स्कूल के लिए किस प्रकार लाभप्रद है?

4. माता-पिता तथा समुदाय के सक्रिय सहभाग के लिए आयोजित किए जा सकने वाले कोई पाँच क्रियाकलाप लिखिए।

5. माता-पिता तथा समुदाय के सदस्यों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से संप्रेषण करने के कुछ तरीके सुझाइए।

6. ईसीसीई दिवस/गोष्ठी की सफलता के लिए इसका आयोजन आप किस प्रकार करेंगे?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1

(क) सत्य

(ख) असत्य

(ग) सत्य

(घ) असत्य

(ङ) सत्य

18.2

(क) सहभागी

(ख) समुदाय

(ग) ईसीसीई केंद्र/प्री-स्कूल

(घ) प्रतिपुष्टि

(ङ) प्री-स्कूल/ईसीसीई केंद्र

(च) माता-पिता/परिवार

18.3

(क) सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

(ख) ईसीसीई के मुद्दों तथा संबंधित विषयों पर कार्यशाला

(ग) बाल मेला/स्थानीय त्यौहार मनाना

(घ) स्थानीय कहनियों तथा कविताओं का संग्रह

(ङ) बच्चों के कलात्मक कार्यों की प्रदर्शनी

(च) खेल दिवस का आयोजन

(छ) कक्षा में माता-पिता द्वारा कहानी सुनाना

(ज) समुदाय में ईसीसीई से संबंधित नाटक प्रस्तुत करना।

शब्दावली

- **गतिविधि क्षेत्र**-प्री-स्कूल कक्षाकक्ष में स्पष्ट रूप से परिभाषित एवं सुसज्जित स्थान जो बच्चों को स्वयं सामग्री के उपयोग करने एवं खोजबीन के अवसर देता है। इसमें गुड़िया क्षेत्र, हस्त संचालन क्षेत्र, अभिनय क्षेत्र, अन्वेषण एवं विज्ञान क्षेत्र, जल क्षेत्र, कला क्षेत्र इत्यादि शामिल होते हैं।
- **समर्थन सामग्री (Advocasy material):** वह सामग्री जो विचारों तथा मानसिकता को प्रभावित करती है।
- **बच्चे के साथ दुर्व्यवहार:** शारीरिक, यौन तथा संवेगात्मक अत्याचार या बच्चे/बच्चों को अनदेखा करना।
- **सहयोगपूर्ण सहभागिता:** दो या दो से ज्यादा संस्थाओं की सहभागिता जो संसाधनों को साझा करने के लिए तैयार होती हैं। उदाहरण के लिए-अभिभावक सम्मेलन के दौरान बाल-विकास के ज्ञान को साझा करना; स्कूल में खेल एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान स्कूल को सहायता एवं सहयोग प्रदान करना।
- **मतैक्य:** एक सामान्य समझौता।
- **प्रारंभिक उत्प्रेरक:** यह बच्चों में समग्र ज्ञानात्मक, शारीरिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए गतिविधियों को शामिल करता है।
- **अधिगम प्रतिफल:** यह वह कथन हैं जो शिक्षक को बच्चे के आवश्यक अधिगम की उपलब्धियों के बारे में समझ प्रदान करते हैं।
- **सरपंच:** गाँव का मुखिया।

संदर्भ

- Bernard Van Leer Foundation. Parental Involvement in Early Learning: .A Review of Research, Policy and Good Practice". International Child Development Initiatives.
- Eliason, C., & Jenkins, L. (1990). *A Practical Guide to Early Childhood Curriculum*. Merrill Publishing Company. Columbus.

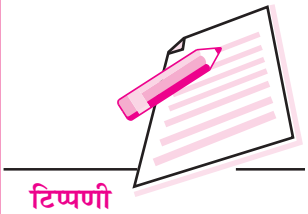

टिप्पणी

- Ministry of Women and Child Development. (2013). *Guidelines for Fixed Monthly ECCE Day 2013*. New Delhi: Government of India.
- National Council of Educational Research and Training. (2005). *National Curriculum Framework, 2005*. New Delhi: NCERT.
- Ministry of Women and Child Development (MWCD) (2013b) *National Early Childhood Care and Education (ECCE) Policy*. New Delhi: Government of India.
- Soni, R. (2009). *Trainers Handbook in Early Childhood Care and Education*. New Delhi: NCERT.
- Soni, R., & Sangai, S. (2014). *Every Child Matters* New Delhi: NCERT.

WEB RESOURCES

- Siolta Research Digests. Parents and Families. http://www.siolta.ie/media/pdfs/ siolta_research_digests.